विघ्नेश्वर-यात्रा अथवा विनायक-यात्रा

लिंगपुराम में इस यात्रा के दो स्वरूप दीख पड़ते हैं। एक तो तीर्थ में वर्त्तमान विनायकपीठों की अर्चना के रूप में और दूसरा इस उद्देश्य से कि विघ्नकर्त्ता गणेश काशीवास में विघ्न न करें। प्रथम दृष्टि से वहाँ केवल चार गणेशपीठों का उल्लेख है जैसा ऊपर पाँचवें अध्याय में स्पष्ट किया जा चुका है। विघ्ननाश के लिए जिन गणेश-पीठों की वन्दना-अर्चना होती है, उनके नाम भी वहीं दिये जा चुके हैं।

काशीखण्ड के अनुसार, विश्वेश्वर-मन्दिर की आठों दिशाओं में विनायकों के सात आवरण है। इनकी यात्रा कठिन है और एक दिन में सम्भव नहीं है; क्योंकि पहले आवरण में क्षेत्र की पूरी प्रदक्षिणा होती है और इ सके बाद इस प्रदक्षिणा की परिधि निरन्तर छोटी होती जाती है। इस प्रकार, विश्वनाथजी की सात परिक्रमा हो जाती है और साथ-ही-साथ सभी विनायकों का दर्शन-पूजन भी हो जाता है। काशीखण्ड के ९७ वें अध्याय में उनके नाम तथा स्थान-निर्देश दिये हुए हैं। तदनुसार नीचे लिखा है। :

प्रथम आवरण :

१. अर्कविनायक : लोलार्ककुण्ड के पास गंगातट पर।
२. दुर्गाविनायक : दुर्गाकुण्ड पर।
३. भीमचण्डविनायक : भीमचण्डी गाँव में।
४. देहलीविनायक : चौखण्डी गाँव में।
५. उद्दण्डविनायक : रामेश्वर के पास भुइली गाँव में।
६. पाशपाणिविनायक : सदर बाजार में।
७. खर्वविनायक : धरणा-संगम आदिकेशव के पास।
८. सिद्धिविनायक : मणिकर्णिका घाट पर अमेठी के शिवालय के समीप ।

द्वितीय आवरण :

९. लम्बोदर विनायक (चिन्तामणिविनायक) : केदासी के पास लाली घाट के ऊपर सड़क पर।
१०. कूटदन्त विनायक : कूमिकुण्ड मुहल्ले में बाबा कीनाराम की समाधि के समीप ।
११. शालकंटककटविनायक: मडुआडीह बाजार में तालाब के पास ।
१२. कूष्माण्डविनायक : फुलवारिया गाँव में चण्डीश्वर के पास।
१३. मुण्डविनायक : चण्डीदेवी के मन्दिर में, सदर बाजार में।
१४. विकटद्विजविनायक : धूपचण्डी देवी के मन्दिर में पिछवाड़े। मकान नं० जे० १२/१३४)।
१५. राजपुत्रविनायक : राजघाट के किले में।
१६. प्रणवविनायक : त्रिलोचन घाट। हिरण्यर्भेश्वर में।

तृतीय आवरण :

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

१७. वक्रतुण्ड विनायक : चौसटठी घाट पर, राणामहल में। मकान नं० डी० २०/४।
(सरस्वतीविनायक)
१८. एकदन्त विनायक : बंगाली टोला में पुष्पदन्देश्वर के द्वार पर। मकान नं० डी० ३२/१०२
१९ त्रिमुख विनायक : सिंगरा के टीले पर त्रिपुरान्तकेश्वर के समीप ।
.२० पंचास्य विनायक : पिशाचमोचन पर।
.२१ हेरम्ब विनायक : वहीं पर बाल्मीकि के टीले पर।
.२२. विघ्नराज विनायक : चित्रकूट के तालाब पर।
२३. वरद विनायक : राजघाट के प्रह्लाद की सड़क पर।
२४. मोदकप्रिय विनायक: त्रिलोचन पर आदि महादेव के मन्दिर में।

चतुर्थ आवरण :

२५. अभयदविनायक : दशाश्वमेघ घाट पर शूलटंकेश्वर के मन्दिर में। मकान नं० डी० १७/१११ के नीचे।
२६. सिंहतुण्ड विनायक : बालमुकुन्द के चौहट्टा के पास ब्रह्मेश्वर के मन्दिर में, मकान नं. डी० ३३/६६।
२७. कूणिताक्ष विनायक : लक्ष्मीकुण्ड पर ।
२८. क्षिप्रप्रसादन विनायक : पितरकुण्डा पर।
२९. चिन्तामणी विनायक : ईश्वरगंगी पर जोगेश्वर मन्दिर में। मकान नं० के० ६६/४।
३०. दन्तहस्त विनायक : बड़े गणेश के घेरे में।
३१. पिचिण्डिल विनायक : प्रह्लादघाट पर।
३२. उद्दण्डमुण्ड विनायक : त्रिलोचन के घेरे में, वाराणसी देवी के मन्दिर में।

पंचम आवरण :

३३. स्थूलदन्त विनायक : मानमन्दिर पर सोमेश्वर मन्दिर के द्वार पर। मकान न. डी० १६/३४ के पास।
३४. कलिप्रिय विनायक : साक्षीविनायक पर मनः प्रकामेश्वर के मन्दिर में। मकान नं. डी० १०/५०।
३५. चतुर्दन्त विनायक : सनातन धर्म काले के पास ध्रुवेश्वर के मन्दिर में।
३६. द्वितुण्ड विनायक : सूर्यकुण्ड पर साम्बादित्य के मन्दिर की दालान में।
(द्विमुख गणेश)
३७. ज्येष्ठविनायक : काशीपुरा में, ज्येष्ठेश्वर में। (मकान नं. के० ६२/१४४)
३८. गजविनायक : मछरहट्टा में भारतभूतेश्वर के मन्दिर में।
३९. कालविनायक : रामघाट पर सीढ़ियों पर पेड़ के नीचे।
४०. नागेश विनायक : १. भोंसला घाट पर नागेश्वर-मन्दिर में। २. महथा घाट पर।

षष्ठ आवरण :

४१. मणिकर्मिकाविनायक : मणिकर्णिका पर पुलिस चौकी के पास।
४२. आशाविनायक : मीरघाट हनुमानजी के मन्दिर में।
४३. सृष्टिविनायक : कालिका गली में।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

४४. यक्षविनायक : रुद्रप्रसाद के मन्दिर में।
४५. गजकर्म विनायक : कोतवाल पुर बांसफाटक सिनेमा के पीछे गली में ईशानेश्वर के मन्दिर में।
४६. चित्रघण्ट विनायक : चौक में १ रानीकुआँ पर, २. जगन्नाथ दास बलभद्रदास की दुकान के पास।
४७. स्थूलजंघ विनायक : इनके स्थान के विषय में मतभेद है। त्रिपाठी जी इनका नाम मित्रविनायक तथा स्थान मंगला गौरी के पास लिखते हैं। वर्तमान काल में नीचीबाग के चित्रघण्ट विनायक में दोनों का पूजन होता है। मूर्तियां भी उस मन्दिर में दो हैं। सम्भवतः, दोनो ही विनायक वहाँ पर हैं। जान पड़ता है कि तोड़फोड़ के बाद चित्रघण्ट विनायक की इस स्थान पर भी स्थापना हुई। कालान्तर में चित्रघण्ट विनायक का पुराने स्थान पर भी मन्दिर बन गया, जो जगन्नाथदास बलभद्रदास की दूकान के पास है।
४८. मंगलविनायक : मंगलागौरी के मन्दिर में।
४८क मित्रविनायक : आत्मावीरेश्वर में, दालान में।

सप्तम आवरण :

४९. मोदविनायक काशी-करवट के मन्दिर में। (मकान नं० सी० के० ३१/१२)
५०. प्रमोदविनायक समीप के ही एक घर में। (मकान नं० सी० के० ३१/१६)
५१. सुमुख विनायक पास ही एक गली में (मकान नं० सी० के० ३५/८)
५२. दुर्मुख विनायक पास ही नैपालीखपड़े की गली में, एक मकान में (मकान नं० सी० के० ३४/६०)।
५३. गणनाथ विनायक ढुण्ढिराज गली में खड़ी मूर्ति। यद्यपि ज्ञानवापी के पास भी। एक विशालकाय मूर्ति पर गणनाथ का नाम पिछले तीस-पैंतीस वर्षों के बीच लिख दिया गया है, परन्तु या ठीक नहीं जान पड़ता ।
५४. ज्ञानविनायक स्थान लुप्त है। कुछ लोगों का मत है कि ये लांगलीश्वर-मन्दिर में है।
५५. द्वारविनायक १. विश्वनाथ के पुराने मन्दिर के द्वार पर।
२. पंचपाण्डव-मन्दिर में।
५६. अविमुक्त विनायक प्राचीन स्थान लुप्त है। विश्वनाथ-मन्दिर में अविमुक्तेश्वर के समीप पूजन होता है। कुछ लोग ज्ञानवापी पर करते हैं। विश्वनाथ मन्दिर में नैऋत्य कोण के देवी मन्दिर में प्राचीन मूर्ति है, ऐसी किंवदन्ती है।

विनायक-यात्रा प्रत्येक मास के कृष्णापक्ष की चतुर्थी को होती है। यदि उस दिस मंगलवार पड़ जाय, तो विशेष माहात्म्य है।

कुर्यात्प्रति चतुर्थीहा यात्रा विघ्नेशतुः सदा।२६

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.